पेहेरयो बागो रे बांधी कमर, अश्व उजले भए अस्वार।
होसी बड़ा मेला बरस एके, साथ होत सबे तैयार।। १० ।।

बुधजी जागृत बुद्धि का निष्कलंक बागा पहनकर जाति-पाति के भेद को छोड़कर ज्ञान के संशय रहित तन रूपी घोड़े पर सवार हुए। आखिरत में सुन्दरसाथ का बड़ा मेला होगा। इस मेले की तैयारी सुन्दरसाथ ने एक वर्ष से (मेड़ते से) शुरू कर दी है।

॥ प्रकरण ॥ ५३ ॥ चौपाई ॥ ५६५ ॥

राग श्री

हो साथ जी वेगे ने वेगे, वेगे ने मिलो रे सैयों समें रास को।। टेक ।।
कारज कारन की बात अति बड़ी, याको क्यों कहिए अवतार।
रे साथ जी हुई अखंड निध पांचों भेली, कियो सो बड़ो विस्तार।। १ ।।

हे साथजी! जल्दी-जल्दी आकर मिलें। जागनी रास का समय आ गया है। यह तो कार्य-कारण की बात है। पारब्रह्म आए हैं। अब इनको अवतार कैसे कहा जाए, क्योंकि इनके अन्दर पांचों अखण्ड न्यामतें इकट्ठी हुई हैं जिनकी लीला का बड़ा विस्तार है।

धनी मैं अरधांग अछर मुझ माहीं, बुध जी बोले सो कई प्रकार।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेंहेदी सिर मुद्दार।। २ ।।

हे धनी! मैं आपकी अंगना हूं। अक्षर ब्रह्म भी मेड़ता से मेरे अन्दर बैठ गए हैं। इस तरह से उनकी जागृत बुद्धि हर प्रकार के भेद खोल रही है। श्री राजजी की पांच शक्तियां-हुकम, जोश, अक्षर, रूह-अल्लाह और जागृत बुद्धि सभी इन इमाम मेंहदी के अन्दर विराजमान हैं। इनके हाथ से कजा होगी।

अंग समागम धनी के, हिरदे लियो सो सब विचार।
साके सोले तोड़ी गुझ रहे, या दिन से कियो सो प्रगट पसार।। ३ ।।

इन पांचों शक्ति का मिलाप इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के अन्दर हो गया है। इसको अब तक विचार कर हृदय में बिठा लेना जो शालिवाहन के सोलह सौ शाका (१७३५) तक छिपे रहे। अब सम्वत् १७३५ से जाहिर हो गए।

आई नूरबुध वैराट माहीं, विश्व करी सो निरविकार।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगें गाऐं सो मंगल चार।। ४ ।।

अब अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि (परा शक्ति) संसार में आई जिसने संसार के सब धर्मों के झगड़े मिटा दिए। अब सब नर-नारी एक साथ मिलकर आनन्द में मंगल गीत गाएंगे।

काटे सो आउध असुरों के, पाड़ी पापीड़ा के सिर पर प्रहार।
इने दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार।। ५ ।।

मुसलमानों की शरीयत रूपी हथियारों को नष्ट किया और पापी कलियुग के सिर पर जागृत बुद्धि ने चोट मारी। जिस कलियुग ने साधु-सन्तों को दुःखी कर रखा था, उस कलियुग को अब सिर पर मार सहन करनी पड़ रही है।

Nijanand App

रुंधी रुदे त्रिगुन त्रैलोकी, बैठा था करके अंधार।
अब प्रगटी जोत तलेलागी आकासों, उड़ाए दियो जो थो धुसार।। ६ ।।

इस कलियुग ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो तीन लोक के मालिक हैं, के हृदय में बैठकर उन्हें अन्धा बना रखा था, अब जागृत बुद्धि का प्रकाश पाताल से बैकुण्ठ तक फैल गया और सबकी अज्ञानता रूपी धुन्ध को समाप्त कर दिया।

जुद्ध दारुण अति जोर हुआ, तिमर घोर झुंझार।
प्रकासवान खांडा धार बुधें, निरमल कियो संसार।। ७ ।।

बुधजी से कलियुग की अज्ञानता में डूबे धर्माचार्यों ने बड़ी जोरदार लड़ाई की। बुधजी ने जागृत बुद्धि की तीखी तारतम रूपी ज्ञान की तलवार से सारे संसार की अज्ञानता को हटाकर निर्मल कर दिया।

पड़्या पड़छंदा पाताल आकासें, धरती धम धमकार।
खल भल हुआ लोक चौदे, करत कालिंगा को संघार।। ८ ।।

बुधजी के एक पैर की ठोकर से पाताल से आकाश तक की धरती हिल गई, अर्थात् सभी के अहंकार टूट गए। चौदह लोकों के संसार में कलियुग को मार देने से खलबली मच गई।

घर घर उछव बाजे रस बाजे, चोहोटे चौवटे थेई थेईकार।
पसु पंखी साधू कोई न दुखी, सुखे खेलें चरें चुगें करार।। ९ ।।

अब धर्मों के झगड़े समाप्त होने से घर-घर में उत्सव और आनन्द मनाए जा रहे हैं और धर्म स्थानों पर सभी आनन्द से नाच रहे हैं। अब कोई महात्मा, पशु या पक्षी दुःखी नहीं हैं। सब आपस में मिलकर भोजन करते हैं और आराम से रहते हैं।

सत बरत्यो त्रिगुन त्रैलोकी, असत न रही लगार।
काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार।। १० ।।

इस सत का फैलाव ब्रह्मा, विष्णु और महादेव तथा त्रिलोक तक हो गया है और अब अज्ञानता का नामोनिशान नहीं रहा। बुधजी ने सभी को आवागमन की कर्म की फांसी से छुड़ा दिया और इसके बाद त्रिदेव को भी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से निर्मल करके अखण्ड कर दिया।

राई गौरी सावित्री जो कोई सती, सब धवल गावें नर नार।
पुरुख दूजा कोई काहूं न कहावे, सबों भजिया कर भरतार।। ११ ।।

अब लक्ष्मी, पार्वती, सावित्री और जो कोई सती स्त्रियां हैं, स्वतन्त्रता से मंगल गीत गा रही हैं। अब सब पारब्रह्म को ही अपना स्वामी मानकर भजने लगे और अब इनके बगैर और कोई पुरुष कहलाने की पात्रता नहीं रखता, क्योंकि सारे जगत का मालिक एक ही पुरुष है।

एक सृष्ट धनी भजन एकै, एक गान एक आहार।
छोड़ के वैर मिले सब प्यार सों, भया सकल में जय जयकार।। १२ ।।

अब सारी सृष्टि का धनी एक प्राणनाथ और उसी एक की ही भक्ति होने लगी। सबका खान, पान और गान एक हो गया। आपस का वैर छोड़ कर सब प्राणनाथजी की जय-जयकार करने लगे।

मिलके साथ आवे दौड़ता, मिने सकुंडल सकुमार।
निजधाम सें आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार।। १३ ।।

अब परमधाम से आई चालीस जुत्थ की बारह हजार सखियां शाकुण्डल और शाकुमार के साथ मिलकर दौड़ती हुई आएंगी।

Nijanand App

खेलें मिल के रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार।
करसी लीला बरस दस तोड़ी, हांस विलास आनन्द अपार।। १४ ।।

इन बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों के साथ चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टि भी मिलकर जागनी रास खेलेंगी। यह हांस, विलास और बेशुमार आनन्द की लीला दस वर्ष तक होगी जिससे मोमिनों को बेशुमार आनन्द मिलेगा)।

बृजलीला लीला रास मांहें, हम खेले जान के जार।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउ सों जान विलसे करतार।। १५ ।।

बृज और रास में हमने अपने श्री प्राणनाथजी को यार समझकर लीला की थी। इस जागनी के ब्रह्माण्ड में हमने तारतम वाणी से श्री प्राणनाथजी की पहचान करके अपने धनी से विलास का आनन्द लिया।

सब्दातीत निध ल्याए सब्द में, मेट्यो सबन को अंधकार।
तीसें सृष्ट विष्णु सौ बरसें, प्रेमें पीवेगा सब्दों का सार।। १६ ।।

सारे संसार के अज्ञानता के अन्धकार को मिटाने के लिए शब्दों से परे परमधाम की न्यामत को शब्दों में वर्णन किया जिससे अगले तीस वर्ष अर्थात् सम्वत् १७७५ तक ईश्वरीसृष्टि को ज्ञान मिलेगा। जीवसृष्टि जो भगवान विष्णु की है, उसको भी सम्वत् १७४५ से १८४५ तक वाणी और परमधाम की प्रेममयी लीला का सुख होगा।

विष्णु को पोहोंचाए ठौर अछर हिरदे, बुध जी देएंगे खोल के द्वार।
अखंड ब्रह्मांड बरस पचास पीछे, रहेसी हिरदे में खुमार।। १७ ।।

जीवसृष्टि की जागनी के बाद बुधजी भगवान विष्णु को अक्षर के हृदय में अखण्ड कर देंगे और आठ बहिश्तों के दरवाजे खोल देंगे। इसके पचास वर्ष बाद अर्थात् सम्वत् १८९५ तक अक्षर के हृदय में खुमारी रहेगी।

किया जमा सब सब्दों का, धोए हाथ और हथियार।
होसी नेहेचल सुख चौदे लोकों, हम देखे खेल कारन इन बार।। १८ ।।

बुधजी ने सारे धर्मग्रन्थों के सार को बता दिया और सब रहस्य खोल दिए (यही हाथ और हथियार धोना है)। सभी काम पूरा कर दिया। अब उसके बाद चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे, क्योंकि इस बार हमने इस खेल को देखा है।

महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार।
हम उठ के आनन्द करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सब सुन्दरसाथ निज दरबार (मूल मिलावा परमधाम) में बैठे हैं और एक साथ जगेंगे। जगने के बाद हम सब परमधाम में झीलना और सिनगार की लीला करेंगे।

तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिन में देखे खेले संग आधार।
धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार।। २० ।।

इस तरह से हमने तीन ब्रह्माण्डों में (बाल, किशोर और बुढ़ापे की) धनी के साथ एक क्षण में लीला खेली और देखी। अब समझ में आया कि मैं धनी की अंगना हूं और सुन्दरसाथ मेरे अंग हैं। हम सदा ही अपने घर में अखण्ड और आनन्द की लीला करते हैं।

॥ प्रकरण ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ ५८५ ॥

Nijanand App